सिखाने तथा प्रचार करने के लिए सहायता

जॉन कैचलमैन

''एल्काना नाम का एक पुरुष था''
(1 शमूएल 1:1)

प्राचीन इब्रानियों के लिए किसी व्यक्ति के नाम का बड़ा महत्व होता था।''एल्काना'' का मूल अर्थ है ''नियन्त्रण परमेश्वर का है।'' यह नाम इस आदमी के लिए सार्थक है।

1. परमेश्वर का *उसके व्यक्तित्व* पर नियन्त्रण था। उसके हर काम से यह संकेत मिलता था कि वह परमेश्वर को आगे रखता है। उसे देखकर ही यह सब साफ समझ आ जाता है।
2. परमेश्वर का *उसके पिता होने* पर नियन्त्रण था। वह अपने बच्चों को सिखाने तथा उनमें विश्वास और कर्तव्य भावना भरने के प्रति सचेत था।
3. परमेश्वर का *उसके विवाह* पर नियन्त्रण था। हन्ना के साथ उसका सम्बन्ध कोमलता, नम्रता, एक दूसरे को समझने वाला, देखभाल करने वाला तथा स्नेहपूर्ण था।

उपासना सामने आई
(1 शमूएल 1:3)

परमेश्वर के लिए एल्काना के समर्पण का पता न केवल उसके धार्मिक कार्य से बल्कि उसके दैनिक जीवन से भी चल जाता है। इस आदमी के समर्पण का पता चलता था ...

1. उसके निरन्तर, अविरोधी, विवेकपूर्ण और समझदारी से किए गए धार्मिक कार्यों से (1:3, 4, 21)।
2. अपने बच्चों को परमेश्वर के मार्ग में शिक्षित करने तथा प्रेम करने की उसकी सतर्कता से (1:4, 21)।
3. हन्ना के प्रति उसके गहरे प्रेम और लगाव से (1:8)।
4. दुखी होने वालों के लिए उसकी संवेदनशीलता, देखभाल और चिंता से (1:8)।

इन सभी कार्यों से उस व्यक्ति के चरित्र का पता चलता है जो सातों दिन परमेश्वर के प्रति सचमुच समर्पित है। इस प्रकार सब पवित्र लोगों को ''मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र'' समझने का आग्रह करने की जरूरत है (1 पतरस 3:15)।

पारिवारिक आराधना
(1 शमूएल 1:4)

प्राचीनकाल के इस परिवार से, आराधना के लिए परिवारों के इकट्ठे होने के महत्व को देखा जा सकता है।

1. पारिवारिक आराधना के *आरम्भ* की बात पर ध्यान दें-''एल्काना मेल बलि चढ़ाता था।'' माता-पिता में सांसारिक उद्देश्यों से पीछे हटकर ईश्वरीय उद्देश्य का पीछा करने की इच्छा होनी आवश्यक है।
2. आवश्यक *ट्रेनिंग* या प्रशिक्षण पर ध्यान दें-''दान दिया करता था।'' बच्चों को

निर्देश की आवश्यकता होती है और यह निर्देश देना माता-पिता का कर्तव्य है।

3. *क्षेत्र* पर ध्यान दें-"सब ... को।" इस ट्रेनिंग में छोटे से लेकर बड़े तक सब बच्चे शामिल होने चाहिए। किसी को भी छोड़ा नहीं जाना चाहिए, क्योंकि इसमें "सब" भाग ले सकते हैं।

"हे पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम रखो!" (1 शमूएल 1:5)

बाइबल कहीं भी पत्नियों को अपने पतियों से प्रेम रखने की आज्ञा नहीं देती, बल्कि यह पतियों को पत्नियों से प्रेम रखने की ही आज्ञा देती है (इफिसियों 5:25, 28)। पर क्यों? क्योंकि पत्नी का प्रेम उसी के अनुरूप होता है। वह अपने पति से वैसे ही प्रेम रखती है जैसा वह रखता है! एल्काना से हमें यह सबक मिलता है कि एक पति को अपनी पत्नी से कैसे प्रेम रखना चाहिए।

1. उससे उदारता से प्रेम रखें (1:5)।
2. उससे दिखाई देने वाले लगाव से प्रेम रखें (1:5)।
3. उसके क्रुद्ध होने पर उससे प्रेम रखें (1:6)।
4. उसके निराश तथा भावुक होने पर उससे प्रेम रखें (1:7, 8)।
5. उसके द्वारा कोई ऐसा काम करने पर जो असंगत लगता हो, उससे प्रेम रखें (1:8)।

एल्काना हन्ना से प्रेम करता था (1 शमूएल 1:5)

1. उसका प्रेम दिखाया गया था (1:5)।
2. परीक्षा के समय एल्काना का प्रेम हन्ना की सामर्थ था (1:5, 6)।
3. उसका प्रेम दिखाया गया था (1:8)।
4. अपने प्रेम के कारण वह तब भी पत्नी की बात "सुन" पाया जब पत्नी की योजनाएं उसकी योजनाओं से मेल नहीं खाती थीं (1:22)।
5. अपने प्रेम के कारण वह अपनी पत्नी के साथ सहयोग करने के लिए प्रेरित हुआ (1:23)।

गलत समझा गया परमेश्वर (1 शमूएल 1:5, 6)

हन्ना के बांझपन के वर्षों को गलत समझा गया था। उन वर्षों का परमेश्वर का कोई उद्देश्य था लेकिन उस उद्देश्य को किसी ने समझा नहीं। परमेश्वर को गलत समझा गया था। इसमें सिद्धांत यह है कि परमेश्वर के ढंग हमारे ढंगों जैसे नहीं हैं, और अक्सर हम उन्हें समझ नहीं पाते (यशायाह 55:9)।

1. कई बार गलत समझा जाता है कि परमेश्वर दण्ड देने वाला है जबकि वह ऐसा

होता नहीं है।

2. कई बार गलत समझा जाता है कि वह पक्षपात करने वाला परमेश्वर है जबकि वह है नहीं।
3. कई बार गलत समझा जाता है कि परमेश्वर यहां नहीं है जबकि ऐसा है नहीं।
4. कई बार लोग पापपूर्ण ढंगों की अनदेखी करने के लिए परमेश्वर के बारे में अपनी गलतफहमी का इस्तेमाल करके कहते हैं, ''मेरे लिए प्रभु मुझसे यही करवाना चाहता *होगा*!''

संक्षेप में, कई बार परमेश्वर पर आरोप लगाया जाता है जबकि वास्तव में उसे गलत समझा गया होता है। एक बार गलत समझने में सुधार हो जाए तो सब बातें पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती हैं। जिस बेटे की हन्ना को तड़प थी वह तब तक नहीं दिया गया जब तक हन्ना प्रभु के सामने समर्पण करने को तैयार न हुई। हमें सावधान रहना चाहिए ज़्योंकि परमेश्वर के बारे में गलतफहमी पीड़ा, ज़्लेश और विश्वास की कमी का कारण बन सकती है! जब भी कोई परीक्षा या परेशानी आए, तो परमेश्वर को गलत न समझें! (अय्यूब 9:1-12; 5:8; 13:15)।

उदासी के सामान्य कारण (1 शमूएल 1:7)

हन्ना निराशा में बहुत डूब चुकी थी; वह हताश हो चुकी थी (1:8ख, 15, 10)। उसके जीवन में आई उदासी का ज़्या कारण था?

1. एक चिड़चिड़ा, व्यज़्तित्व, पनिन्ना (1:7)
2. यह भावना कि वह संतान उत्पन्न करने में पूरी तरह से नाकाम रही (1:2, 5, 6; तु. 1:16)
3. परमेश्वर की इच्छा की समझ कम होना (1:5ख, 6ख, 11)
4. उसका खाना खाने से इन्कार कर देने पर शारीरिक सज़्भाल में कमी (1:7ख)

परन्तु वह एक प्रेमी पति की जो सचमुच उसकी देखभाल करता था, बातें सुनकर निराशा से निकल आई (1:8ख)। ''उठकर'' वह काम में लग गई और उसने खाया-पीया (1:9)। उसने रो-रोकर परमेश्वर के सामने प्रार्थना की (1:10)। उसने अपनी परेशानी परमेश्वर के आगे बता दी। यह परेशानी उसके लिए इतनी बड़ी थी कि उसने इसे अपने आप सुलझाने की कोशिश ही छोड़ दी थी। ज़्योंकि परमेश्वर में भरोसा रखने वाले उदासी पर विजय पाने वाले प्रति दिन के जीवन में एक तेज से भरे अन्त के लिए प्रतीक्षा करते हैं (2:20, 21)।

शांति के लिए नज़्शा (1 शमूएल 1:9-18)

हन्ना को गलत बताया गया था। उसका मन दु:खी था (1:8); वह बहुत निराश थी (1:10); वह बड़ी लाचार थी (1:15)। वह संघर्ष कर रही थी। परन्तु जीवित थी! वह अंधकार में से दिन के उजाले में आई थी। यह कैसे हो गया?

1. वह आराधना के लिए गई (1:9)।
2. उसने परमेश्वर के सामने रो-रोकर दिल से दुआ मांगी (1:10, 15)।
3. उसने "अपनी चिंताएं उसी पर डालते हुए" परमेश्वर की आशिषें पानी चाहीं (1:11)।
4. उसने कुछ करने के लिए निजी जिम्मेदारी स्वीकारी (1:11)।
5. वह अपनी निराशा और आवश्यकता के बारे में दूसरों से खुलकर बात कर सकती थी (1:14-16)।
6. उसके बोझ हल्के कर दिए गए, और उसका मुंह "उदास न रहा" (1:18; तु. यिमर्याह 31:13ख)।

एक भयप्रद काम (1 शमूएल 1:12-18)

मन्दिर के शांत वातावरण में, परेशान हन्ना ने परमेश्वर के सामने अपना मन खोल दिया था। एली ने उसका बाहरी व्यवहार देखा और गलत ढंग से उसका फैसला किया। उसकी गलती आज भी बहुत से लोग दोहराते हैं। यह एक व्यक्ति द्वारा सभी तथ्यों को जानने से पहले दूसरे का न्याय करने की भयप्रद बात है।

1. कोई एकदम से यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि सब गलत हैं (1:14)।
2. कोई दु:खी मन को और दु:खी कर सकता है। हन्ना पहले ही दु:खी थी कि वह मां नहीं बन पाई। अब वह अपने आप को "ओछी" समझने लगी थी (1:16)।
3. कोई निन्दा कर सकता है कि इससे हन्ना के चरित्र के बारे में अनावश्यक प्रश्न उठे (1:16)।
4. हो सकता है कि कोई मन को देखने का प्रयास करने में विफल रहा हो (1:15)।
5. कोई असंवेदनशील, कठोर, जल्दबाजी वाला और निर्मोही फैसला ले सकता है।

यद्यपि एली गलत था, परन्तु अपनी गलती को पहचानकर वह बदल गया था। हन्ना की सहायता के लिए आकर उसने उसे प्रोत्साहित किया (1:17, 18)। उसे एक महत्वपूर्ण सबक मिल गया था!

"यहोवा ने सुधि ली" (1 शमूएल 1:19)

हन्ना की पुकार (1:11) का उत्तर एक छोटे से वाक्य में दे दिया गया था। परमेश्वर ने उसकी सुधि क्यों ली? उसके विश्वास, प्रार्थना, निराशा और मुश्किलों के कारण। उसे क्या सांत्वना दी गई थी?

1. संघर्षों के बावजूद, परमेश्वर हमारी सुधि *लेगा* और हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा (रोमियों 8:28; 1 कुरिन्थियों 10:13; भजन संहिता 34:15-20)।
2. जब लगता है कि हम बहुत मुश्किल में हैं, तो परमेश्वर हमें छुड़ा लेगा (नीतिवचन

11:8)।

3. मनुष्य तो भूल सकता है और भूल भी जाता है, लेकिन परमेश्वर नहीं (भजन संहिता 37:28)।

व्यवस्थाविवरण 4:31; उत्पत्ति 19:29; भजन संहिता 50:15 पढ़ें। जितनी अधिक परमेश्वर की स्मरण शक्ति है उतनी ही अधिक "स्मरण न रखने" की भी उसमें क्षमता है (यिर्मयाह 31:34; इब्रानियों 8:12; 10:17)।

"यहोवा ने दिया है!"
(1 शमूएल 1:27)

आत्मिकता की कितनी गहराई है इस वाक्यांश में! यह हन्ना के मन का प्रकटावा है।

1. यह हमारे जीवित रहने के लिए परमेश्वर पर विश्वास और निर्भरता को दिखाता है। परमेश्वर उपाय करेगा!
2. यह ऐसे मन को दिखाता है जिसने अपनी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को प्रकट किया। परमेश्वर सुनेगा और उत्तर देगा!
3. मनुष्य की योग्यता पर भरोसा करने की कमी को दिखाता है। परमेश्वर कर सकता है पर मनुष्य नहीं!
4. यह उस व्यक्ति को दिखाता है जो महान दानी परमेश्वर को समझता है। परमेश्वर देना चाहता है!

प्रार्थना में पक्का भरोसा
(1 शमूएल 1:27)

परमेश्वर से प्रार्थना करके हम आश्वस्त हो सकते हैं! परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है और उनका जवाब देगा (इफिसियों 3:20; इब्रानियों 4:16)। हन्ना को अपनी प्रार्थनाओं पर ऐसा भरोसा क्यों था?

1. वह जानती थी कि परमेश्वर उसकी निराशा को जानता है (1:10)।
2. वह जानती थी कि परमेश्वर के सामने उसका मन निर्मल, ईमानदार और स्पष्ट है (1:15)।
3. वह जानती थी कि निष्कपट प्रार्थना से मिलने वाला आनन्द तथा शांति क्या है (1:18)।
4. उसने परमेश्वर के प्रबन्ध में काम करना और भरोसा रखने का निश्चय कर लिया था (1:11, 12, 22)।
5. प्रार्थना की सामर्थ में उसका भरोसा, विश्वास और निश्चय दृढ़ था।
6. प्रार्थना में उसका आश्वासन धन्यवाद के द्वारा और मजबूत हुआ जब उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया गया। परमेश्वर ने जब उसे उत्तर दिया तो वह चुप नहीं रही!

सफल माता-पिता होना
(1 शमूएल 1:28)

भटके हुए बच्चे के माता–पिता की पीड़ा को व्यज़्त करने के लिए पर्याप्त शज़्द नहीं हैं। यद्यपि ऐसा कोई ढंग नहीं है जिसमें बच्चों के पालन–पोषण में माता–पिता के सफल होने की गारंटी दी जा सके, परन्तु फिर भी कुछ नियमों का पालन किया जाना आवश्यक है।

1. माता–पिता होने के कर्ज़व्य की महानता को समझें, ज़्योंकि हर बच्चा परमेश्वर की ओर से वरदान है! (1:27)।
2. सुकुमार तथा कोमल हृदयों में हर महत्वपूर्ण आत्मिक सिद्धांत डालने की आवश्यकता को समझें (1:24)।
3. हर बच्चे को परमेश्वर के सामने ''समर्पित'' करने के लिए समय तथा ऊर्जा दें (1:28)।
4. जवानों को लज़्बे परिश्रम में परमेश्वर की सेवा करने के लिए प्रभावित करें (1:28)।

माता–पिता बच्चों को केवल वही सिखा सकते हैं जिसका उन्हें खुद पता हो। वे वही आचरण सिखा सकते हैं जो उनमें स्वयं हो और परमेश्वर के प्रति उनमें उतना ही सज़्मान डाल सकते हैं जितना उनमें स्वयं हो। इस कारण माता–पिता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके जीवन वचन तथा व्यवहार दोनों में भज़्तिपूर्ण हैं।

यरोहाम का पुत्र एल्काना
(1 शमूएल 1:1-28)

1. एक समर्पित धार्मिक आदमी (1:3–6, 21)
2. अपने बच्चों के धार्मिक विकास में रुचि लेने वाला पिता (1:4, 22, 23)
3. एक पति, जिसने विवाह के लिए परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन करने के कारण अपने परिवार में फूट को देखा था (1:2, 6)
4. परमेश्वर के साथ की गई प्रतिज्ञा को निभाने के लिए दृढ़ संकल्प (1:21)
5. अपनी पत्नी के प्रति प्रेम और समर्पण को बातों तथा व्यवहार से दिखाने वाला (1:8)

पिता को कौन सी बात आदरयोग्य बनाती है
(1 शमूएल 1:1-28)

1. परमेश्वर के लिए आदर और सत्कार (1:3)
2. आत्मिकता होने की निरन्तरता और आदत (1:3)
3. परिवार के सामने भज़्ति का प्रदर्शन (1:4, 21)
4. अपनी पत्नी के प्रति प्रेम का प्रगटावा (1:5, 8)
5. अपनी पत्नी के साथ सहयोग तथा संवाद (1:23)

6. परमेश्वर के वचन में पक्का भरोसा (1:23ख)
7. परमेश्वर के लिए अपने बच्चों को समर्पित करने को तैयार (1:28)

आज के पुरुषों के लिए तीन प्राथमिकताएं (1 शमूएल 1:1-28)

1. ऐसा पुरुष बनें जो परमेश्वर पर भरोसा रखता हो, परमेश्वर की आराधना करता हो और परमेश्वर के साथ अपने वचन को निभाता हो।
2. ऐसा पति बनें जो अपनी पत्नी को बातों से तथा व्यवहार से समझाता हो (1:5, 8)।
3. ऐसा पिता बनें जिसका उद्देश्य बच्चों को धार्मिक जोश तथा परमेश्वर के प्रति समर्पण में बढ़ाना हो (1:4, 21, 28)।

मां के कई रूप (1 शमूएल 1:1-2:19)

1. उत्तेजनाओं तथा सीमाओं से उदास और संघर्षरत उसका रूप जिस पर उसका कोई वश नहीं है (1:2-7)।
2. आराधना सभाओं में समर्पण और स्तुति करने वाला उसका रूप है (1:5)।
3. सहायता के लिए बिनती करते हुए परमेश्वर के सामने अपना मन खोलकर लगन से प्रार्थना करने का उसका रूप (1:9-18)।
4. जीवन के उद्देश्य तथा अर्थ को भांपने पर उसका चेहरा आनन्दित और परिपूर्ण हो जाता है (1:20)।
5. निर्बोध बालक की देखभाल करते हुए और हर रोज उसकी आवश्यकताओं को पूरा करते हुए उसका रूप कोमल प्रेम वाला है (1:22, 23)।
6. जीवन के मार्ग में चलने के लिए एप्रन उतार दिए जाने पर उसके चेहरे से जुदाई की पीड़ा की झलक मिलती है (2:11)।
7. बच्चे के बड़ा हो जाने पर समाज में रुतबा पाने पर उसका चेहरा गर्व से फूल जाता है (2:19)।

मां के इन कई रूपों में बड़ी सुन्दरता है। यह सुन्दरता समय से कम नहीं होती या झुर्रियों या बुढ़ापे के कारण खराब नहीं होती। यह मन को चैन देने वाली एक ऐसी शांति है जो बच्चे के परेशान मन को शांत करती, बच्चे के मन में उठे तूफ़ानों को शांत करती, और सुरक्षा का आभास कराती है। मां के विभिन्न रूप लम्बे समय तक याद रखे जाते हैं। जब मृत्यु के समय उसकी आंखें बंद होती हैं, तो यह उसके बहुत से रूपों में से एक और रूप होता है जो याद रखने योग्य है– यह रूप निर्विघ्न विश्राम तथा भौतिक शांति का रूप है, क्योंकि वह प्रभु की सम्भाल में सो रही होती है। उसके परोपकार के काम उसे आराम करने का बिस्तर देते हैं! मां के बहुत से रूपों को याद करने से बड़ी और कोई आशीष नहीं हो सकती!

एल्काना, एक भक्त पिता
(1 शमूएल 1:1-2:21)

1. वह एक ऐसा पिता था जो अपने परिवार के सामने धार्मिक था (1:3)।
2. वह एक ऐसा पिता था जो अपने बच्चों को परमेश्वर के साथ किया गया वचन निभाने की आवश्यकता सिखाता था (1:21)।
3. वह एक ऐसा पिता था जो परिवार को धार्मिक बनने के लिए उत्साहित करता था (1:4, 21)।
4. वह एक ऐसा पिता था जो अपने बच्चों को पत्नी के लिए सच्चा प्रेम रखता दिखाता था (1:8)।
5. वह एक ऐसा पिता था जो अपने बच्चों की आत्मिक सेवा को तैयार था (1:28)।

हन्ना: मातृत्व का स्मारक
(1 शमूएल 1:1-2:21)

1. परमेश्वर में विश्वास का एक स्मारक। संदेह एवं निराशा के समय वह परमेश्वर के पास गई (1:9–18; 2:1–10)।
2. परीक्षाओं में धीरज का एक स्मारक (1:7)। हन्ना ने बांझपन से इतने लम्बे समय तक संघर्ष किया।
3. बच्चों के प्रति समर्पण का एक स्मारक (1:22; 2:19)। वह शमूएल से प्रेम करती और उसकी देखभाल करती थी।
4. बलिदान का एक स्मारक (1:28)। वह परमेश्वर को अपना अनमोल बेटा देने को तैयार थी।
5. माता–पिता होने का दायित्व निभाने का स्मारक (1:28)। अपने पुत्र के लिए उसके जीवन का एक ही लक्ष्य था कि वह सदा के लिए परमेश्वर के घर में रहे (1:22)।

हन्ना: आदर्श मां के लिए परमेश्वर का विचार
(1 शमूएल 1:1-2:21)

1. वह अपने बच्चों के लिए परमेश्वर से शुद्ध मन तथा लगन से प्रार्थना करती है (1:10–18)।
2. वह अपने बच्चों के साथ होने और उनका पालन–पोषण करने की आवश्यकता को समझती है (1:21–22)।
3. उसके जीवन का लक्ष्य अपने बच्चों को सदा के लिए परमेश्वर के घर में देखने से ऊपर और कोई नहीं है (1:22ख, 28; 2:20)।
4. उसका व्यवहार इस प्रकार का होता है कि उसका पति उसके विचारों तथा परामर्श की कद्र करता है (1:23)।

5. परमेश्वर की सामर्थ में उसका अटल विश्वास है (1:27; 2:1-10)।
6. अपने बच्चों के प्रति अपने प्रेम तथा समर्पण को बताने का उसके पास छोटा और सूक्ष्म ढंग है (2:19)।

यहोवा की ओर से आशिषें (1 शमूएल 2:1)

1. मन संतुष्ट, प्रसन्न और आनन्द से भरा है।
2. सामर्थ और धैर्य बढ़ते हैं।
3. आत्मविश्वास के कारण नास्तिकों को गलत सिद्ध किया जाता है।

ये आशिषें क्यों मिलती हैं? क्योंकि उद्धार "प्रभु में" है।

एली: शैतान के पुत्रों के साथ परमेश्वर का जन (1 शमूएल 2:12-4:22)

यह अत्यंत दुखदायी परिस्थिति है जिससे सब माता-पिता डरते हैं। मन्दिर में अपने कार्य करते हुए एली और उसके पुत्रों में अंतर (1:4; 2:13, 14), संदूक को (4:3, 4; 4:13, 18क), दूसरों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया (2:16; 2:25) और परमेश्वर की धारणा (2:17; 2:25) देखें।

ऐसी खतरनाक परिस्थिति के लिए दो कारक जिम्मेदार लगते हैं: ज़िद पूरी करते हुए पालन-पोषण करना (3:13; 2:25) और बच्चों को बिना अगुआई दिए अपने निर्णय खुद लेने की अनुमति देना (2:12, 17, 25; 3:13)। जब माता-पिता तथा बच्चे परमेश्वर के प्रति मिलकर आदर नहीं रख पाते तो खतरनाक नतीजे निकलते हैं।

1. परिवार का प्रभाव खत्म हो जाता है (2:22-24)।
2. झगड़े बढ़ जाते हैं (2:25)।
3. परमेश्वर के प्रति परिवार का समर्पण कम हो जाता है (2:29)। ("तुम लोग" एली और उसके पुत्रों के लिए इस्तेमाल किया गया है।)
4. परिवार की विरासत केवल दुःख और शोक ही होगी (2:33; 4:13-17)।

ऐसे परिवार से आम तौर पर परमेश्वर की महिमा छिन जाती है (4:19-22)। आधुनिक परिवारों को एली और उसके पुत्रों वाली दुर्दशा में देखकर कितना दुख होता है!

गंभीर वास्तविकताएं (1 शमूएल 2:13-17)

1. परमेश्वर का भय रखने वाले माता-पिता द्वारा पाले पोसे गए बच्चे भक्तिहीन हो सकते हैं (2:12)।
2. धार्मिक अगुवे परमेश्वर के बजाय अपने प्रति समर्पित हो सकते हैं (2:15)।
3. आराधना के ढंग आशीष के बजाय श्राप हो सकते हैं (2:17)।

एक शर्मनाक प्रभाव
(1 शमूएल 2:17)

एली के पुत्रों ने प्रभु के बलिदान का खुलेआम अपमान किया था। ''मनुष्य यहोवा की भेंट का तिरस्कार करते थे।'' कितना बुरा है कि कोई परमेश्वर की आराधना तथा भेंटों के बारे में गलत चर्चा करने का कारण बने। यह कैसे हुआ था?

1. वे केवल अपने आप को ही देखते और बेशर्मी से अपना आनन्द पूरा करते थे।
2. वे परमेश्वर की शिक्षाओं का अपमान करते थे।
3. वे अपने पिता की शिक्षाओं को ठुकराते थे।
4. वे अपने प्रभाव से होने वाले परिणामों की परवाह नहीं करते थे।

यही शर्मनाक प्रभाव हमारे जीवनों में भी देखा जा सकता है। क्या हम ऐसा कोई कार्य कर रहे या करने की अनुमति देते हैं जिससे मसीह और उसकी कलीसिया की बदनामी हो सकती है? न्याय के दिन खड़े होकर यह सुना जाना कि हमने परमेश्वर के बलिदान को बदनाम किया है, कितना दुखी करने वाला है!

''और शमूएल बढ़ता गया''
(1 शमूएल 2:21)

शमूएल के बढ़ने के तीन हवालों (2:21, 26; 3:19) में, हम पहले परमेश्वर के प्रति समर्पण तथा बढ़ने को देखते हैं। क्यों?

1. उसके माता-पिता की शिक्षा के कारण
2. मन्दिर में उसके निरन्तर रहने के कारण
3. अपने साथियों के प्रति उसकी ईमानदारी के कारण
4. परमेश्वर की व्यवस्था को बचपन में सीखने की उसकी लगन के कारण

एक पिता की सलाह को नकारा गया
(1 शमूएल 2:22-25)

एली के पुत्रों ने उसकी कौन सी शिक्षा को नकारा था?

1. धार्मिकता के विषय में उसकी बातों को (2:22)
2. परमेश्वर के विषय में उसकी बातों को (2:12)
3. परमेश्वर की आराधना के बारे में उसकी बातों को (2:13-17)

क्योंकि उन्होंने अपने पिता की सलाह को नकार दिया था इसलिए दण्ड उनकी प्रतीक्षा कर रहा था (2:25ख)।

पाप का सामना करना
(1 शमूएल 2:22-25)

1. पाप प्रकट किया जाएगा और सामने लाया जाएगा, क्योंकि पाप सदा तक छुपा

नहीं रह सकता (2:22, 23)।

2. पाप की बात तेज़ी से दूर तक फैलती है (2:24)।
3. जब कोई परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है और मन फिराने से इन्कार करता है तो क्षमा असज़्भव हो जाती है! कोई उज़्मीद नहीं रहती (2:25क)।
4. यद्यपि पाप को बिना खुली छूट देकर होते रहने दिया जा सकता है, परन्तु हो जाने पर बिना परिणाम के नहीं रहता (2:25ख; 3:13)।

एक पिता की असफलताएं (1 शमूएल 2:27-36)

पिता के रूप में एली की असफलता से पता चलता है कि अपने बच्चों का पालन पोषण करने के लिए माता-पिता को ज़्या *नहीं* करना चाहिए।

1. परमेश्वर की आज्ञाओं को तुच्छ न समझें (2:27-29क)।
2. अपने बच्चों को परमेश्वर से बढ़कर सज़्मान न दें; यदि वे पाप करते हैं तो उन्हें उचित ठहराने के बहाने न बनाएं (2:29ख)।
3. बच्चों द्वारा बुरे कार्य करने पर उनका साथ न दें (2:29ग)।
4. माता-पिता होने की अपनी भूमिका को असावधानी से न लें; आपके बच्चों के पालन-पोषण के ढंग से बहुत से लोग खतरनाक ढंग से प्रभावित होंगे (2:30-36)।

परमेश्वर के प्रति मनुष्य की जिज़्मेदारी (1 शमूएल 2:29)

एली को नबी के प्रश्न ''ज़्यों?'' का सामना करना पड़ा। उसे अपने व्यवहार तथा कार्यों का हिसाब देने के लिए बुलाया गया था। सब लोगों के लिए यही बात सत्य है (2 कुरिन्थियों 5:10)। हमें किस बात के लिए जिज़्मेदार ठहराया जाएगा?

1. परमेश्वर की आराधना की योजनाओं (''बलिदान,'' ''भेंट'') को कठोरता से मानने के लिए
2. परमेश्वर तथा मसीह को महत्व (''आदर'') देने के लिए
3. लालच (''चर्बी चढ़ाने'') के लिए

परमेश्वर की बुलाहट का जवाब देना (1 शमूएल 3:10)

परमेश्वर की बुलाहट का स्वीकार्य जवाब केवल यही है:

1. हम पर परमेश्वर के अधिकारपूर्ण दावे को **पहचानना** (''कह'')
2. ईमानदारी से सुनने की **इच्छा** (''सुन रहा है'')
3. आज्ञा मानने तथा सेवा करने की **विनम्रता** (''तेरा दास'') (''सुन रहा है'')

परमेश्वर को समर्पण
(1 शमूएल 3:18)

1. यह बहुत देरी से किया गया। तब तक एली के पुत्र बड़े हो गए थे और उन्होंने अपनी-अपनी पसन्द का चयन कर लिया। यदि यह समर्पण पहले हुआ होता तो उनके जीवन ही अलग होते।
2. यह दु:खी होकर किया गया था। माहौल शोकमय था; निर्णय बदला नहीं जा सकता था। यदि एली परमेश्वर को पहले समर्पण कर देता, तो उसे आनन्द और प्रसन्नता मिल सकती थी।
3. यह व्यर्थता से माना गया। एली ने अकेले ही बिना परमेश्वर के कोशिश की थी। उसने ज़्या गलती की थी! अब घोर निराशा में उसने अपनी व्यर्थता मान ली थी। यदि यही काम उसने पहले किया होता तो शायद उसे निराशा का मुंह न देखना पड़ता।

यदि हम शांति, आनन्द तथा प्रसन्नता पाना चाहते हैं तो जीवन के आरज़्भ में ही हमें बिना हिचकिचाहट के परमेश्वर का समर्पण मान लेना चाहिए!

असली सुन्दरता का रहस्य
(1 शमूएल 25:3)

अबीगैल सचमुच सुन्दर महिला थी। वह मन की भी सुन्दर थी।

1. एक कारण जो उसके मन की सुन्दरता को दिखाता है वह उसका विश्वास!
2. अबीगैल के विश्वास के कारण उसकी सुन्दरता उसकी चमकदार तथा रौबदार उपस्थिति तथा चिड़चिड़े और क्रोधित व्यज़्ति को शांत करने की उसकी योग्यता में दिखाई देती है।
3. इन गुणों के कारण, वह उन सब लोगों के लिए आशीष थी जिनके साथ उसका सज़्पर्क था (25:32)।
4. मन की सुन्दरता परमेश्वर का भय रखने वाली स्त्री को अपने जीवन में परमेश्वर का उद्देश्य पूरा करने के योग्य बना देती है। उसे सच्ची सुन्दरता का रहस्य मिल जाएगा।

क्रोध को टालना
(1 शमूएल 25:24-31)

दाऊद बहुत गुस्से में था। वह अपना क्रोध दिखाने वाला था। ऐसे क्रोध को टालने के लिए एक महिला ज़्या कर या कह सकती है? अबीगैल हमारा उदाहरण है।

1. क्रोधित लोगों के पास दीन होकर जाएं (25:24)।
2. अपनी असफलताओं को मान लें और कष्ट की ज़िज़्मेदारी लें (25:28)।
3. बीच में परमेश्वर को लाएं (25:29-31)।

4. अनुग्रहपूर्वक क्षमा स्वीकार करें (25:32, 33)।
5. स्पष्ट संवाद के लिए और शब्दों का इस्तेमाल करें तथा ध्यान से सुनें भी (25:24, 35)।

शमूएल: समर्पण का एक उदाहरण

शमूएल की कहानी परमेश्वर के प्रति समर्पण तथा श्रद्धा की एक ऐसी कहानी है जिसकी कोई बराबरी नहीं है। मां के गर्भ में आने के समय से लेकर कब्र में रखे जाने तक, वह एक समर्पित व्यक्ति था।

1. वह अपनी जवानी में उत्सुक था (2:11, 18-21; 3:1-21)।
2. वह वयस्क होने के वर्षों में दृढ़-प्रतिज्ञ रहा (7:1-17)।
3. वह अपने सुनहरी वर्षों में संतुष्ट था (8:1से; 9:15-10:25; 12:1-25)।
4. उसे मृत्यु के समय प्रतिफल मिला (25:1; 28:12-19)।

उसकी जीवनी से हर उम्र के लोगों को परमेश्वर के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा मिलती है।